शोध सारांश

संत कबीर और तुकाराम दोनों कालजयी पुरुष हैं। दोनों संतों ने अपने काव्यके माध्यम से समाज को परिवर्तित करने का प्रयास किया है। संत कबीर और तुकाराम के समय जाति-पाति, छुआछूत, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, सामाजिक,धार्मिक अंधविश्वास तथा कर्मकांड आदि समस्याएं थीं। आज शिक्षा का प्रसार सर्वत्र होते हुए भी समाज में जाति-पाति, छुआछूत, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, सामाजिक,धार्मिक अंधविश्वास, कर्मकांड आदि पर लोग विश्वास रखते हैं। इन समस्याओं का संत कबीर और तुकाराम ने अपने काव्यके माध्यम से विरोध किया है। यही कारण है कि इन दोनों संतों का काव्य आज आवश्यक एवं प्रासंगिक लगता है। संत कबीर और तुकाराम दोनों कवियों का उद्देश्यसमाज सुधारना तो रहा है, इसके अलावा ईश्वर की भक्ति या आराधना करते हुए लोगों को सन्मार्ग दिखाना भी रहा है। वे दोनों संत समाज में रहने वाले पाखंडियों पर प्रहार करते हैं। उनका कहना है कि समाज में ऐसे लोग या साधु होने चाहिए, जो दूसरों के दुख में शामिल हो सके और मानव को मानवता की दृष्टि से देखें। संत कबीर और तुकाराम का धर्म सच्चामानव धर्म है, जो मनुष्य को जोड़ता है। कबीर और तुकाराम के युग में हिंदू-मुस्लिम में सांप्रदयिकता के नाम पर लड़ाई होती थी। आज भी राम मंदिर, बाबरी मस्जिद तथा गोधरा हत्याकांड जैसी हिंसक घटनाएं रोज देश के किसी न किसी कोने में घटित हो रही है जिसमें आम आदमी बली चढ़ रहा है। हिंदू कहते हैं हमें राम प्यारा है और मुस्लिम कहते हैं हमें रहीम प्यारा है। दोनों समुदाय धर्म के नाम पर आपस में लड़ाई करते है। संत तुकाराम कहते हैं कि चंडालो का स्पर्श हो जाने से धर्म भ्रष्ट नहीं होता परंतु मन में भेदभावरखने से धर्म नष्ट हो जाता है।

संत कबीर और तुकाराम कहते हैं कि मनुष्यको कथनी और करनी में अंतर नहीं करना चाहिए वे कहते हैं हम जो बोलते हैं उसका ही आचरण करना चाहिए। गलत बोलना या गलत काम करना विष के समान होता है। आज समाज में लोग जो बोलते है वैसा आचरण नहीं करते। खास करके हमारे आज के राजनेता चुनाव के समय बड़े-बड़े आश्वासन देते हैं। लेकिन चुनकर आने के बाद वे सब कुछ भूल जाते हैं। इन सभी कारणों से आज संत कबीर और तुकाराम याद आते हैं।

संत कबीर और तुकारामवर्ण व्यवस्था का विरोध करते हैं वे कहते हैं कि समाज में न कोई छोटा होता है न कोई बड़ा। सब मनुष्य एक समान है लेकिन आज समाज में उच्च जाति के लोग निम्न जाति वाले लोगों को हीन दृष्टि से देखते हैं। संत कबीर और तुकाराम पतिव्रता नारी की सराहना करते हैं और वेश्या नारी की निंदा करते हैं। वे कहते हैं कि पतिव्रता नारी अपने पति को प्रिय होती है। वह अपने पति को सबकुछ मानकर उसकी सेवा करती है परंतु वेश्या नारी पर पुरुषों को अपने जाल में फंसाकर उनके घर में कलह निर्माण करती है। आज भी समाज में वेश्याओं की संख्या अधिक मात्रा में दिखाई देती है जो दूसरों के घर में आग लगा देती है। इसलिए संत कबीर और तुकाराम का काव्य प्रासंगिक लगता है।

आज का मनुष्य पैसों को ज्यादा महत्व दे रहा है। वह पैसों के लिए भ्रष्टाचार, चोरी आदि समाज विघातक कृत्य कर रहा है, इसके लिए वह अपने रिश्ते-नातें सब भूलकर पैसों के पीछे कुत्ते जैसा दौड़ रहा है। इस प्रकार धन कमाने वाले लोगों की संत कबीर और तुकाराम निंदा करते हैं। वे कहते हैं मनुष्य ने धन के पीछे नहीं दौड़ना चाहिए। जितनी आवश्याकता है उतना ही धन कमाना चाहिए। क्योंकि मरने के बाद वह धन हमारे साथ में नहीं आता बल्कि अपने भाई-बहन, पुत्र-पुत्रियों में कलह निर्माण करता है। संत कबीर और

तुकाराम ने अपने काव्य में राजनीति का भी परिचय दिया है। वे कहते हैं कि राजा ऐसा हो जो प्रजा को अपना लगे। राजा को प्रजा के सुख-दुख में सहयोग देना चाहिए। किंतु वर्तमान युग में राजनेता सत्ता स्थापित करने के लिए सामान्य लोगों को झूठे आश्वासन देकर सत्ता स्थापित करते हैं और बाद में किए हुए वादे भूल जाते हैं। वे राजनीति में खुद का स्वार्थ देखते हैं। ऐसे नेताओं को दोनों संत अपनी वाणी के माध्यम से सूचित करते हैं कि निस्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा करें। इसमें ही सच्चे ईश्वर की प्राप्ति होगी।

अत: हम यह कह सकते हैं कि संत कबीर और तुकाराम का साहित्य एक ही विचारधारा से प्रेरित है जिसमें प्रेम, दया, करूणा, परोपकार, संयम और शांति का दर्शन होता है। इन दोनों संतों का काव्य भूत, वर्तमान, भविष्य इन तीनों कालों में विश्व के लिए उपयोगी है।